वर्ष - 5, अंक - 10, अक्टूबर 2014

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

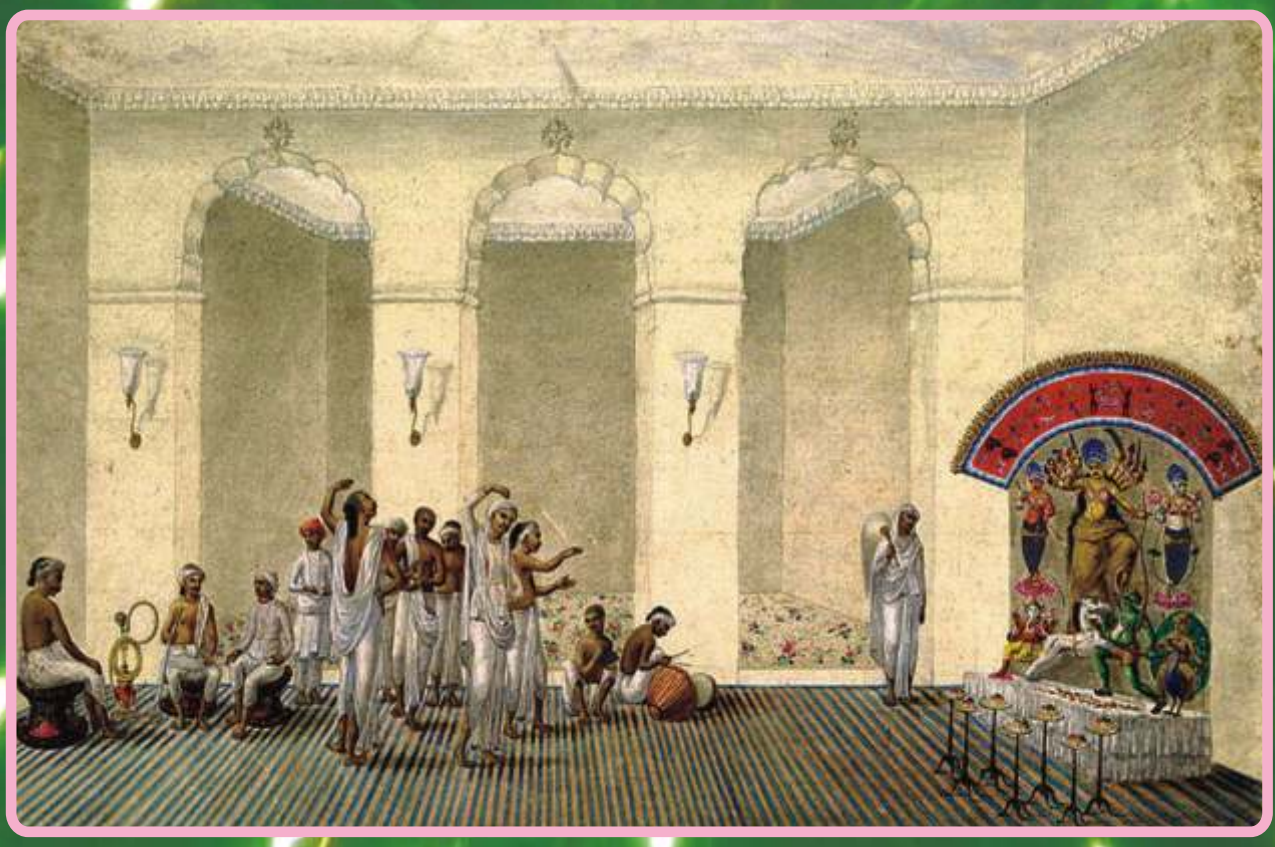

● पद्मश्री गजेन्द्र नारायण सिंह

दशहरे का संगीत समारोह

पटना में दशहरा के संगीत समारोहों की परंपरा 60 वर्ष पुरानी है। इसकी शुरुआत 1944 में गोविन्द मित्रा रोड से हुई थी। इसकी सफलता ने कई दशहरा मंडलियों को संगीत आयोजन के लिए प्रेरित किया, इनमें खास थीं भारत माता मंडली, नया टोला, मारूफगंज, पटना सिटी, झुनझुनवाला लेन, दानापुर, पटना जंक्शन, बोरिंग रोड और गर्दनीबाग।

राजन-साजन मिश्रा : दशहरा 2006

वास्तव में शास्त्रीय संगीत का पहले आम जलसा नहीं होता था, बल्कि रइसों और नवाबों की हवेलियों पर महफिल आयोजित होती थी। देश का पहला आम जलसा जिसका नाम 'संगीत सम्मेलन' था, 1926 में रामपुर के नवाब और बड़ौदा महाराज गायकवाड़ के सौजन्य से हो सका। लोगों के बीच इस कार्यक्रम की स्वीकृति ने ऐसे नि:शुल्क आयोजित होनेवाले सार्वजनिक संगीत समारोहों की जरूरत स्थापित कर दी। कला संस्कृति की उर्वर भूमि बिहार भला कहां पीछे रहने वाला था।

1944 में पटना में दशहरे के अवसर पर जब शास्त्रीय संगीत के आयोजन की शुरुआत हुई तो यह दुनिया का अनूठा आयोजन बन गया। पटना सार्वजनिक संगीत समारोह के आयोजन की जानकारी देश तो क्या विश्वभर में कहीं नहीं है। एकबार मशहूर तबलावादक लतीफ खां से एडिनबर्ग में किसी ने पूछा, 'यहां जैसे कार्यक्रम आपके यहां होते हैं?' लतीफ खां ने जवाब दिया, 'भाई साहब, आपके यहां तो दो-चार हजार लोग होते हैं, लेकिन हिन्दुस्तान में पटना ऐसी जगह है जहां रात भर एक पांव पर खड़े होकर पचासों हजार लोग संगीत समारोह में आते हैं।'

पश्चिम में बगैर शुल्क के कोई काम की अवधारणा नहीं है। नि:शुल्क संगीत समारोह खासकर पटना की अवधारणा है। पटना की यह शानदर परंपरा 1944 से लेकर अस्सी के दशक तक खूब कायदे से चली, लेकिन दुखद बात है कि पिछली सरकार के शासनकाल में यह परंपरा खत्म होती गयी। संगीत के ये जलसे, कोई राजे-महाराजों की महफिलें नहीं थीं, बल्कि आम लोगों का उत्सव था। यह सिर्फ मनोरंजन का अवसर नहीं बल्कि बिहारवासियों के सांस्कृतिक उत्थान का भी उत्सव होता था। वाकई यह दुनिया को चकित करता था कि ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी जैसी शास्त्रीय संगीत की विधाओं पर आम आदमी इस कदर कैसे सम्मोहित हो सकता है।

उल्लेखनीय है कि पटना में यह आयोजन कई सत्रों में चलता था। रात का सत्र, भोर का सत्र, कभी-कभी आयोजन दिन में भी जारी रहता था। बाद में आर्केस्ट्रा वगैरह भी मंच पर आ गये, लेकिन यह सब 12 बजे रात तक समाप्त हो जाता था, और मंच शास्त्रीय कलाकारों को सौंप दिया जाता था। खास बात यह भी थी कि इन समारोहों के आयोजक संगीत को जानने की दृष्टि से निरक्षर थे, लेकिन कार्यक्रम आयोजित करने का जुनून और समर्पण उन्हें इन आयोजनों के लिए ऊर्जस्वित रखता था।

उल्लेखनीय है कि पटना के दशहरा संगीत समारोहों में संगीत के बड़े-बड़े दिग्गजों ने उत्साहपूर्वक अपनी भागीदारी निभायी। उस्ताद बिस्मिलला खां, बिरजू महाराज, किशन महाराज, अल्लारखा खां, बेगम अख्तर, पंडित जसराज, सितारा देवी, ओंकारनाथ ठाकुर, करामतुल्ला खां, किशोरी अमोनकर, सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बाई, विनायक राव पटवर्द्धन, रईस खां, दत्तात्रण विष्णु पलुस्कर, नारायण राव व्यास, जोरा बाई बड़ोदकर उस्ताद अहमद जान थिरकवा। हिन्दुस्तान के संगीत के इतिहास में शायद ही ऐसा कोई नाम हो जिसकी उपस्थिति ने पटना के दशहरा के

किशोरी अमोनकर : दशहरा 2006

संगीत समारोहों को सम्मानित नहीं किया हो। सिर्फ दो अपवादों के नाम याद आते हैं, एक पंडित रविशंकर और दूसरे उस्ताद आमिर खां। किशन महाराज ने तो यहां तक कहा था कि पटना के दशहरे के कारण मैं 35-36 वर्षों से बनारस का दशहरा नहीं देख पाया, फिर भी मुझे इसका दुख नहीं सालता।

खास बात है कि हिन्दुस्तान भर में मशहूर पटना के दशहरे का संगीत समारोह कभी पटना भर का नहीं रहता था, बल्कि पूरे बिहार और बिहार से बाहर के लोग भी इसमें शामिल होने आते थे और बकायादा दो-तीन दिन ठहरकर संगीत सागर में डूबते-उतराते थे। आज भी कल्पना कर सिहरन होती है कि एक ही रात में किसी मंच पर बिस्मिल्लाह खान हैं तो किसी पर सितारा देवी, तो किसी पर किशन महाराज। वास्तव में उस समय लोगों के लिए चुनाव करना कठिन हो जाता था कि किस आयोजन में रहें और किसे छोड़ दें। आश्चर्य नहीं कि संगीत की ऊर्जा से सराबोर लोग रातभर एक से दूसरे पंडाल तक भागते रहते थे।

इतनी शानदार परंपरा का अपने सामने लुप्त होते देखते रहना वाकई हमारे जैसे लोगों के लिए काफी कष्टदायक था। 2006 में नीतीश कुमार की सरकार ने संगीत परंपरा को फिर से पुनर्जीवित करने की पहल की थी। आज जरूरत है कि गैर-सरकारी स्तर पर भी इस उत्साह को बरकारार रखा जाये और इसे एक मुकम्मल आकार दिया जाये, जिससे पटना की ऐतिहासिक पहचान पुनर्जीवित हो सके।

(बिहार समाचार अक्टूबर 2007 से साभार)

व्याख्यान

लोक के गहरी जड़ों से उपजी है आधुनिक कला: बालन नाम्बियार

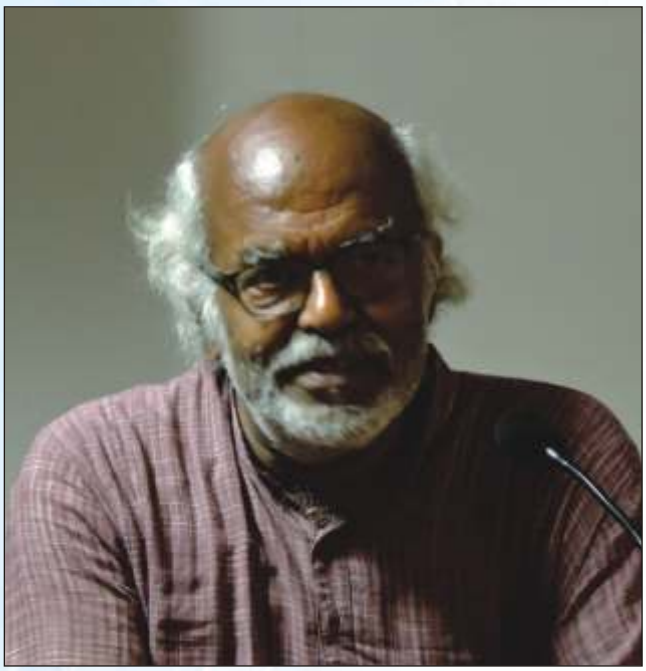

बालन नाम्बियार देश के ही नहीं अंतराष्ट्रीय स्तर के प्रमुख मूर्ति शिल्पी हैं। आजादी के बाद जिन मूर्तिकारों ने भारतीय मूर्तिशिल्प को गढ़ा है उनमें नाम्बियार प्रमुख हैं। अस्सी के करीब नाम्बियार एक सरल व्यक्ति हैं और उतना ही सरल है उनका शिल्प। केवल उसका व्याकरण समझने की जरूरत है। बालन जी की जो ग्रामीण पृष्ठभूमि है, वह केरल के कन्नूर जिले कन्नपुरम गाँव से जुड़ी है। लोक में प्रचलित प्रदर्शनकारी तथा चाक्षुष परम्पराओं को बालन ने काफी धीरज के साथ देखा और उसे समझने की कोशिश की है। फिर उसकी छवियां स्मृतियों में रहीं जिसने वर्षों बाद क्रमशः कलात्मक रूप ग्रहण किया। यह बालन की सर्जनात्मक क्षमता का आधार बना, जो उनकी कृतियों में लालित्यपूर्ण ढंग से परिलक्षित होता है। बालन नाम्बियार देश के प्रमुख कलाकार के साथ-साथ ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष भी रहे हैं । विगत दिनों वे पटना उच्च न्यायालय के शतवार्षिकी पर कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा आयोजित वरिष्ठ कलाकारों की कार्यशाला में भाग लेने पटना आए तो उन्होंने बिहार ललित कला अकादमी द्वारा 'कला मंगल' शृंखला के अंतर्गत केरल की लोक कलाओं से लेकर अपनी रचना प्रक्रिया पर एक पावर प्वायंट प्रेजेन्टेशन भी किया।

बालन ने बताया कि वे खेतिहर परिवार से आते हैं जहाँ उनके परिवारवाले खेती करते थे तो बालन ने भी खेतों में हल चलाए। धन बोए आदि काम किया। उनके गाँव में जब थेयम प्रदर्शन होता था तो वे उसे न केवल देखते थे बल्कि वे प्रदर्शन की तैयारी का भी सूक्ष्म अवलोकन करते थे। खासकर कलाकारों में मेकअप, वेशभूषा आदि का। बालन गणित और ड्राइंग में अव्वल विद्यार्थी होने के कारण रेलवे में ड्राफ्टमैन की नौकरी करने 1959 में चेन्नई आ गए। बाद में कला में गहरी दिलचस्पी के कारण इन्हें सी जी एस पनिक्कर का साथ मिला और इन्होंने रेलवे की नौकरी छोड़ दी और मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स में दाखिला लिया। बाद में 70 के दशक में वे बंगलोर आए। बंगलोर में बंगलोर आर्ट क्लब की नींव डाली और कला गतिविधियों तथा प्रदर्शनी, सेमिनार और कला-कक्षाओं की शुरूआत की।

सत्तर के दशक में ही उन्होंने हेगड़े और गोले वाचेस के लिए स्टेनलेस स्टील का आठ फीट ऊंची मूर्तिशिल्प बनाया। उसके बाद बालन नाम्बियार ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। फिर बालन ही हीडेनबर्ग, जर्मनी में पोर्टलैंड सीमेंट फैक्ट्री के लिए एक शंख का शिल्प बनाया। फिर शंख का एक वृहत शिल्प उन्होंने सेन्टर ऑफ डिजीटल टेक्सास, टेककॉम के लिए बनाया। जिसमें उन्होंने शंख को डिजीटल पावर के प्रतीक के रूप में था।

बालन नाम्बियार पर पुराण, जातक, रामायण आदि ग्रंथों के मिथिकीय चरित्रों का काफी प्रभाव रहा है। रामायण में राम के द्वारा बाली वध ने उन्हें काफी उद्वेलित किया बल्कि उन्हें अशांत किया। क्योंकि बाली का वध राम ने अनैतिक तरीके से किया था। उस वध पर केन्द्रित उन्होंने एक मूर्तिशिल्प ''मोनूमेंट टू द एसैसिनेटेड'' (स्टोन) बनाया जो काफी चर्चित रहा। बालन बताते हैं कि उत्तर केरल के इलाकों में बाली की सैकड़ों मूर्तियाँ हैं, जिनका शिल्पी समुदाय यथा सोनार, लोहार, बढ़ई आदि पूजा किया करता है। बालन बताते हैं कि केरल में कुडुीआट्टम और कथकली के प्रदर्शन में बाली की भूमिका राम की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण होती है।

उस तरह से देखें तो बालन के सृजन के पीछे उनका गम्भीर शोध कार्य रहा है। बालन ने थेयम (केरल के कसरगोडे और कन्नूर जिला में प्रचलित), भूटा, नागमंडला पर शोध किया बल्कि उन्होंने वेस्ट कोस्ट के 27 पारंपरिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन और उनका अभिलेखीकरण किया । इस तरह के अभिलेखीकरण से बालन ने मुचुलोतु भगवती थेयम, इयप्पम पट्ट कलम, पुलाया थेयम, पोट्टम थेयम, मक्कन थेयम, घंटा करनन थेयम, भगवती के स्लाइड्स दिखाए । फिर इन परम्परागत प्रदर्शन से अपनी मूर्तिशिल्प के विकास को दर्शाया ।

बालन ने एनामेल रंगों को लेकर भी कार्य किया है। उन्होंने कई शिल्पों के ऊपर ज्वेलरी एनामेल रंगों के अद्‌भुत प्रयोग किया। बालन ने अपने ससुराल पक्ष की एनामेल रंगों की विशेषज्ञता का लाभ उठाया जो इटली के हैं।

बालन आज भी 78 वर्ष की उम्र में किसी भी युवा कलाकार से ज्यादा सक्रिय हैं । देश के मूर्धन्य कलाकार बालन नाम्बियार के बिहार भ्रमण से बिहार के मूर्तिशिल्प विधा को एक नई दिशा मिलेगी, उम्मीद है।

–विनय कुमार

सुर्खियों में संस्कृति

हाईकोर्ट के शताब्दी वर्ष पर आयोजित राष्ट्रीय कलाकारों की कार्यशाला के अंतिम दिन कलाकारों ने पेंटिंग्स को दिया फिनिशिंग टच

कैनवास पर लगायी 'खूबसूरत अदालत'

देश के दिग्गज कलाकारों ने हाइकोर्ट के हर पहलू को मॉडर्न आर्ट में चित्रित किया

इन्हें कोर्ट में सजाया जायेगा

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

नाटक में दिखा भारतेन्दु का लेखन

प्रेमचंद रंगशाला में तीन नाटक सत्यवादी हरिश्चंद्र, अंधेर नगरी और अग्नि कोण की प्रस्तुति

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग और बिहार संगीत नाटक अकादमी की ओर से आयोजित भारतेन्दु जयंती के दूसरे दिन प्रेमचंद रंगशाला में तीन नाटक सत्यवादी हरिश्चंद्र, अंधेर नगरी और अग्नि कोण की प्रस्तुति दी गई। दर्शकों ने इसके लिए भारतेन्दु के रचनाकर्म का मर्म समझा।

DRAMA

चित्रकृतियों में सिंदूर का कमाल

पटना | कार्यालय संवाददाता

पेंटिंग में खेत, चौपाल व सिंदूर

दिखी 49 कलाकृतियां

दिखी सिंदूर की शक्ति

मार्च में बन जाएगा संग्रहालय

* भवन निर्माण मंत्री का दावा
* 298 करोड़ रुपये की लागत से बेली रोड में बन रहा म्यूजियम

विधायकों को करना होगा इंतजार

'जिनकी सांस कलम थी और लहू स्याही'

प्रेमचंद रंगशाला में साहित्यकार भारतेंदु की जयंती पर दो दिवसीय समारोह शुरू, मंत्री विनय बिहारी ने किया कार्यक्रम का उद्घाटन

जागरण संवाददाता, पटना

दोबारा आयोजित होगा भारतीय कविता समारोह

हाईकोर्ट के शताब्दी वर्ष पर कार्यशाला

ये कलाकार ले रहे हिस्सा

नाम्बियार ने दिखाई अपनी कलाकृतियां

सात बिहारी कलाकारों को मिलेगा

पटना | कार्यालय संवाददाता

इन कलाकारों का चयन

'शुक्रगुलजार' में झूम उठी शाम

बिहान

परेश नायक

Indian Arts Offset, Patna-6, Mob. 9431011172

वर्ष - 5, अंक - 10, अक्तूबर 2014

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
श्री विनय बिहारी

प्रधान संपादक
चंचल कुमार

संपादक
विनोद अनुपम

संपादक मंडल
सुबोध कुमार चौधरी
के. डी. प्रौज्जवल (संस्कृति)
अरविन्द ठाकुर (क्रीड़ा)
जे. पी. एन. सिंह (संग्रहालय)
अतुल कुमार वर्मा (पुरातत्व)

सम्पादकीय सम्पर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email : culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

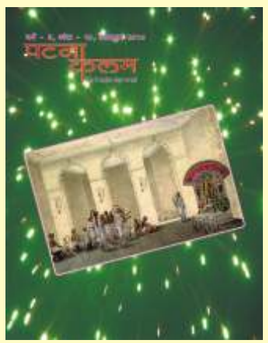

आवरण
दुर्गापूजा 1809, वाटर कलर पेंटिंग,
पटना कलम शैली
चित्रकार—सेवक राम (1770-1830)
संग्रह—ब्रिटिश लाइब्रेरी

प्रधान सम्पादक की कलम से

लंगर टोली के चौराहे पर बिस्मिल्लाह खान की शहनाई गूंज रही है, गोविन्द मित्रा रोड पर उस्ताद हलीम जाकर खान सरोद की धुन पर श्रोताओं को विभोर कर रहे हैं। खजांची रोड के नुक्कड़ पर पंडित ओंकार नाथ ठाकुर का गायन चल रहा है। गांधी मैदान में सितारा देवी की मुद्राओं में दर्शक डूबे हैं, हार्डिंग पार्क में गोपी कृष्ण के घुंघरु छनक रहे हैं, तो मुसल्लहपुर हाट में परवीन सुल्ताना की कव्वाली चल रही है। दुनियां के किसी भी हिस्से के लिए दुर्लभ-सा यह दृश्य पटना के दशहरे की रात के लिए सहज सुलभ था। आज इस दृश्य की कल्पना कर मन में सिहरन सी होने लगती है, मन उस स्वप्न से निकलना ही नहीं चाहता कि लोग बिस्मिल्लाह खान के बाद कुमार गंधर्व, फिर गुदई महाराज और फिर उर्मिला नागर से रु-ब-रु हो रहे हैं, एक ही रात में, एक ही शहर में।

हर शहर की उत्सवों से जुड़ी अपनी एक पहचान होती है। मैसूर का दशहरा, पुरी की रथयात्रा, मुम्बई की गणपति पूजा, कोलकाता का दुर्गापूजा। पटना की पहचान दशहरे के अवसर पर आयोजित संगीत कार्यक्रमों से होती थी। देश भर के बड़े से बड़े गायक, बड़े से बड़े नर्तक की यह इच्छा रहती थी कि वे दशहरे के अवसर पर पटना के कार्यक्रमों में भाग ले सकें। शायद, यह गौरव मात्र पटना को उपलब्ध होगा कि यहां पधारने के लिए कलाकार स्वयं संपर्क करते थे। लगातार तीन दिनों तक शहर के चौराहों, नुक्कड़ों, पार्कों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर रात-रात भर कार्यक्रम चलते रहते थे। दर्शकों-श्रोताओं की भीड़ सर्वोत्तम की तलाश में एक के बाद एक पंडालों में रात भर भागती फिरती थी।

पटना के संगीत कार्यक्रम की यह विशेषता थी कि यह बंद सभागार में चुनिंदा श्रोताओं के बीच नहीं, आमजन के बीच होते थे, चौराहों पर, नुक्कड़ों पर, गालियों में। इस कारण शास्त्रीय संगीत का परंपरागत अभिजात्यपन टूटता था। जानकार आज भी याद करते हैं कि खचाखच भरे पंडालों से भी कलाकारों को सही समय पर दाद मिलती थी। वास्तव में शास्त्रीय संगीत की दुरुह कला को दशहरे के उत्सव के साथ जोड़कर पटना ने उसे नवजीवन देने का सफल प्रयास किया था।

तीन दिनों का यह संगीत उत्सव पूरे वर्ष भर पटना को शास्त्रीयता के रस से रससिक्त रखता था। इन कार्यक्रमों से पूरे शहर को एक सांस्कृतिक आवेग मिलता था। कार्यक्रम के पहले छः महीने कार्यक्रम की तैयारी में बीतते थे, तो बाद के छः महीने इनकी चर्चाओं में। गुदई महाराज, कुमार गंधर्व, सितारा देवी के नाम पटनावासियों के जुबान पर किसी घनिष्ठ परिचित की तरह चढ़े रहते थे। दशहरे के अवसर पर बिस्मिल्लाह खान की शहनाई और हलीम जाफर खान के सरोद जब गूंजते थे तो भारतीय संस्कृति की विराट परंपरा की जड़ों को खुद खाद पानी मिलती थी। मुस्लिम धार्मिक अवसरों से जुड़ी कव्वाली का खासतौर से दशहरे के अवसर पर आयोजन शहर की साझा संस्कृति को बिना किसी दावे के पुष्ट करती थी।

2006 में सरकार की पहल पर एक बार फिर किशोरी अमोनकर, राजन साजन मिश्रा, शारदा सिन्हा जैसे कलाकारों के साथ दशहरे की संगीत परंपरा को पुनर्जीवित करने की कोशिश की गई । आज भी 'संगीत बिहान' और 'शुक्र गुलजार' जैसे कार्यक्रमों की सफलता को पटना की संगीत परंपरा से जोड़कर देखा जा सकता है। हम विश्वास कर सकते हैं कि एक बार फिर पटना शास्त्रीय संगीत के सरगमों के बीच दशहरा उत्सव मनाने के लिए अपने आपको तैयार कर सकेगा।

शुभकामनाओं के साथ

(चंचल कुमार)
सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

● भारतेन्दु जयंती

अपने देश में अपनी भाषा में उन्नति का आह्वान

भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपनी सुप्रसिद्ध बलिया व्याख्यान में कहा था; बंगाली, मराठा, पंजाबी, मद्रासी, वैदिक, जैन, ब्राह्मणों, मुसलमान सब एक हाथ पकड़ो। जिसमें तुम्हारी कारीगरी यहां बढ़े, तुम्हारा रुपया तुम्हारे ही देश में रहे, वह करो। देखो, जैसे हजार धारा होकर गंगा समुद्र में मिली है वैसे ही तुम्हारी लक्ष्मी हजार तरह से इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका को जाती है। दिया-सलाई जैसी तुच्छ वस्तु भी वहीं से आती है। हर समान विदेशी क्यों? भाइयों, अब तो नींद से चौंको, अपने देश की सब प्रकार उन्नति करो। जिसमें तुम्हारी भलाई हो वैसी ही किताब पढ़ो, वैसे ही खेल खेलो, वैसी ही बातचीत करो। परदेशी वस्तु और भाषा का भरोसा मत रखो। अपने देश में अपनी भाषा में उन्नति करो। इन्हीं विचारों के केन्द्र में कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा प्रेमचंद रंगशाला में भारतेन्दु जयंती के अवसर पर भारतेन्दु हरिश्चंद्र के कवि, रंगकर्मी और विचारक की भूमिका को श्रद्धा के साथ स्मरण किया गया।

दो दिवसीय आयोजन का उद्घाटन करते हुए विभाग के मंत्री विनय बिहारी ने कहा कि गुलामदेश में उनका जन्म हुआ। वो ऐसा वक्त था, जब अंग्रेज जो चाहते थे, खिलाते थे। अपने हिसाब के कपड़े पहनाते थे। खुद के बनाए और बनवाए गए सामानों को जबरन देश पर थोपते थे। साथ ही लूटते भी थे। लेकिन, इन्हीं दौर में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने देश की साहित्य को सबसे बेहतर तरीके से लोगों तक पहुंचाया। 35 वर्ष की अल्प आयु में मृत्यु के बाद भी उन्होंने देश के लिए जो सपने देखे वो आज भी अमल से बाहर हैं। उन्होंने कहा कि यद्यपि भारतेन्दु का मात्र 35 वर्षों की अल्पायु में निधन हुआ था तथापि इतनी कम अवधि में भी उन्होंने जो साहित्य रचा, वह अविस्मरणीय है। इससे पूर्व नाट्यालोचक श्रीकांत किशोर ने विषय प्रवर्तन करते हुए उनकी सृजनशीलता को रेखांकित किया। उन्होंने भारतेन्दु को हिन्दी नवजागरण का पुरोधा बताते हुए जयंती के उद्देश्यों सहित उनकी विविध रचनाओं का विश्लेषण और व्याख्या की।

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव चंचल कुमार ने कहा कि भारतेन्दु के युग से प्रदेश के विद्यार्थियों को सीख लेनी चाहिए। युवा पीढ़ी को जानना होगा कि कम समय में सही प्रयास कर युवा बहुत कुछ प्राप्त सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज भी हिन्दी साहित्य को पढ़ने वाले शहरों में पटना पहले स्थान पर है। इस बात को देखते हुए बिहार सरकार लगातार इस तरह के आयोजन करता रहेगा, जिससे यहाँ के युवाओं को सही दिशा मिलती रहे। समारोह को विभाग के उपाध्यक्ष प्रदीप्तो मुखर्जी और उपसचिव सुबोध कुमार चौधरी ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम के पहले दिन का समापन पटना इप्टा के कलाकारों द्वारा भारतेन्दु रचित गीतों, गजलों और कविताओं की सांगीतिक प्रस्तुति सीताराम सिंह के संगीत निर्देशन में हुआ। प्रारंभ भारतेन्दु के गीत 'रोवहु सब मिलके आवहु भारत भाई, हा हा भारत दुर्दशा देखी न जाई' और समापन 'जागो-जागो रे भाई' के समवेत रूप में कोरस से हुआ।

दो दिवसीय भारतेन्दु जयंती के समापन समारोह में भारतेन्दु के विविध अवदानों पर परिसंवाद गोष्ठी आयोजित थी। परिसंवाद में 'अंधेर नगरी और बाजार' के वक्ता स्निग्ध, 'भारतेन्दु की कविताई', अविनाश चंद्र मिश्र और 'भारतेन्दु का रंगमंच' पर केन्द्रित परिसंवाद में रंगकर्मी जावेद अख्तर ने अपने विचार व्यक्त किये। परिसंवाद का आरंभ करते हुए सुरेन्द्र स्निग्ध ने कहा कि भारतेन्दु का जन्म 1850 में हुआ। 1857 में सिपाही विद्रोह हुआ। वह देश के लिए संक्रमण काल था। भारतेन्दु ने 1881 में 'अंधेर नगरी' नाटक लिखा। वह काल अंग्रेजों के शासन में विक्टोरिया का काल था। इस नाटक के माध्यम से उन्होंने अंग्रेजों की आर्थिक संरचना पर आघात किया। नाटक के दूसरे दृश्य में बाजार का परिदृश्य था। जहां कबाव, फल-सब्जी, सब कुछ टके सेर था। लेकिन उस समय मजदूरों की मजदूरी एक आना थी। उस दृष्टि से महंगाई अपनी चरमसीमा पर थी। उन्होंने कहा कि बाजार का रूख जो 1881 में था आज भी वही है। नाटक के अंत में एक संवाद है- यह कैसा नाटक है। वस्तुत: 1881 में उभरा सवाल आज भी जबाव मांग रहा है।

'भारतेन्दु की कविताई' पर केन्द्रित अपने परिसंवाद में अविनाश चंद्र मिश्र ने कहा कि मात्र 17-18 साल की उम्र में भारतेन्दु ने लगभग एक सौ पचास रचनाओं का सृजन किया। जिनमें साहित्य की लगभग सभी विधाएं समाहित हैं। उनकी रचनाओं में, कविताओं में विविध भाषाओं का समावेश है। यहां तक कि उन्होंने उर्दू में भी शायरी की। वस्तुत: भारतेन्दु के काल में हिन्दी भाषा, वृजभाषा और खड़ी बोली के परस्पर द्वन्द्व के अतिरिक्त अरबी, फारसी, उर्दू प्रधान शैली के परस्पर संघर्ष का शिकार थी। इनकी भाषा शैली का जो भी स्वरूप था, उसी का विकास आगे चलकर हुआ। हिन्दी साहित्य और उनकी कविताई आधुनिक काल में एक युग विशेष का सफल और सार्थक प्रवर्तन है। भारतेन्दु के साहित्यिक व्यक्तित्व के दूसरे पक्ष एक कुशल और सिद्धहस्त नाटककार के रूप को रेखांकित किया रंगकर्मी जावेद अख्तर ने। उन्होंने कहा कि भारतेन्दु ने अनेक मौलिक और अनुदित नाटकों की रचना की। जावेद ने उनके नाटककार के व्यक्तित्व को विस्तार से रेखांकित किया।

कार्यक्रम के समापन पर पंडारक की नाट्य संस्था किरण कला निकेतन ने भारतेन्दु लिखित नाटक 'सत्य हरिश्चंद्र' की प्रस्तुति की। सत्य हरिश्चंद्र की प्रस्तुति किरणकला निकेतन पंडारक द्वारा शिवकुमार शर्मा के निर्देशन और प्रस्तुति परिकल्पना मिथिलेश राय की थी। इस प्रस्तुति में छोटे-छोटे बच्चियों सहित साठ साल के उम्र के भी अभिनेताओं ने मंच पर अपना कौशल दिखाया। समारोह की अध्यक्षता बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष आलोक धन्वा ने की।

-प्रणव कुमार

● कला मंगल

सिंदूर के माध्यम से दिखी भारतीय संस्कृति

शहर के लोगों को देश के ग्रामीण जीवन और भारतीय संस्कृति के विविध रंगों को एक ही छत के नीचे देखने को मिला। यह मौका लेकर आया था बिहार सरकार का कला संस्कृति एवं युवा विभाग। बिहार ललित कला अकादमी की ओर से चलाई जा रही कला मंगल शृंखला के तहत बहुद्देशीय सांस्कृतिक परिसर, फ्रेजर रोड की आर्ट गैलरी में वरिष्ठ कलाकार अर्चना सिन्हा के बनाए चित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में उनकी 41 कलाकृतियां प्रदर्शित की गयी थीं।

अर्चना शहर के जानी-मानी छापा कला की कलाकार है। उनकी यह पहचान इस पेंटिंग प्रदर्शनी में दिखी। यहां लगी इस प्रदर्शनी में अर्चना की बनाई वैसी पेंटिंग जिनमें उन्होंने छापा कला का इस्तेमाल किया था सबके आकर्षण का केन्द्र थी। छापा कला का इस्तेमाल कर उन्होंने देश के ग्रामीण जीवन

को बड़ी ही खूबसूरती के साथ कैनवाश पर उतारा। छापा कला के माध्यम से बनी पेटिंग में वुड, लिनो, एचिंग और लिथो जैसी तकनीक का इस्तेमाल किया गया था। हर पेंटिंग अपने आप में काफी कुछ कह रही थी। किसी में झोपड़ीनुमा घर के रूप में गांव की तस्वीर दिखाने की कोशिश की गई थी तो किसी में ग्रामीण महिलाओं के जीवन को, सभी में ग्रामीणों का संघर्षपूर्ण जीवन दिख रहा था। बारीक कारीगरी वाली इन पेंटिंग को देख सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता था कि इसे बनाने में कलाकार को कितनी ज्यादा मेहनत करनी पड़ी होगी।

अर्चना की पेंटिंग प्रदर्शनी में सिंदूर को प्रतीक के रूप में लेकर बनाई गई पेंटिंग प्रमुख रूप से शामिल थी। इनमें सिंदूर को भारतीय परंपरा और भारतीय सभ्यता-संस्कृति के प्रतिनिधित्व के रूप में दिखाया गया। इनमें अर्चना ने अपनी कला के माध्यम से दिखाया कि शादी-विवाह जैसी मांगलिक आयोजन हो या फिर मंदिर में पूजा और आस्था से जुड़ी कोई गतिविधि; सब में सिंदूर का प्रयोग होता है। सिंदूर का प्रयोग कलात्मक रूप से कर अर्चना की सुंदर पेंटिंग देखने वालों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर रही थी।

प्रदर्शनी का उद्घाटन कला संस्कृति विभाग के सचिव चंचल कुमार ने किया। सचिव ने इस दौरान प्रदर्शनी का निरीक्षण भी किया और कलाकारों को विभाग की ओर से हर संभव सहयोग देने की बात कही । उन्होंने कहा कि सरकार कला संस्कृति के विकास के लिए प्रयासरत है । इसी कड़ी में यहां कला मंगल शृंखला के तहत इस प्रदर्शनी को लगाया गया है। राज्य के कलाकारों को अपनी कला के प्रदर्शन का एक मंच देने का प्रयास इस शृंखला से किया जा रहा है। इस अवसर पर बिहार ललित कला अकादमी के अध्यक्ष आनंदी प्रसाद बादल, उपाध्यक्ष मिलन दास, पद्मश्री गजेन्द्र नारायण सिंह, वरिष्ठ आर्ट फोटोग्राफर शैलेन्द्र कुमार, विभाग के संयुक्त सचिव सुबोध कुमार चौधरी, सांस्कृतिक कार्य निदेशालय के निदेशक के. डी. प्रौज्ज्वल, के साथ लक्ष्मी पंडित, मनोज कुमार बच्चन, योगिन्द्र सिंह गंभीर, रिजवाना खान, राजकुमार लाल, विरेन्दर कुमार सिंह, राखी कुमारी, अभिषेक चौबे, रश्मि सिंह, दिनेश दिवाकर, राकेश कुमार समेत बड़ी संख्या में कला प्रेमी और कला के छात्र-छात्राएँ मौजूद थे।

-साकिब

● पटना उच्च न्यायालय शताब्दी वर्ष

कैनवास पर दिखी न्याय की गरिमा

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार एवं बिहार ललित कला अकादमी, पटना के द्वारा 'पटना उच्च न्यायालय के शताब्दी वर्ष पर देश के नौ चोटी के चित्रकार, मूर्तिशिल्पी के साथ-साथ तीन राष्ट्रीय स्तर के वरिष्ठ छायाकार की कार्यशाला आयोजित की गई। दिनांक 21 से 28 सितंबर तक यह कला कार्यशाला बिहार ललित कला अकादमी स्थित कला दीर्घा में आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में निम्नलिखित कलाकारों ने भाग लिया।

विरेश्वर भट्टाचार्य– 1959 ई० में कला एवं शिल्प विद्यालय में कला शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। 1970 ई० में तुर्की सरकार की छात्रवृति पर एक वर्ष के लिये स्ताम्बूल अकादमी ऑफ फाईन आर्ट में चित्रकला की उच्च शिक्षा लेने गये। अध्ययन के दौरान इन्होंने पेरिस, म्यूनिख, वेनिस और एथेन्स के कला संग्रहालयों को गंभीरता पूर्वक देखा।

इन्हें 1978 ई० में शिल्प कला परिषद की ओर से राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया। ये बिहार ललित कला अकादमी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इस कला कार्यशाला में इन्होंने जो चित्रकृति सृजित की है उसका शीर्षक है 'जस्टिस-जस्टिस'। इसमें इन्होंने महात्मा बुद्ध को आम आदमी की तरह देखने का प्रयास किया है।

वेद नायर– वेद नायर का जन्म 1933 ई० में अविभाजित पाकिस्तान के लायलपुर में हुआ। देश के विभाजन के बाद ये सपरिवार दिल्ली आकर बस गये। 1957 ई० में इन्होंने दिल्ली ललित कला महाविद्यालय से ललित कला में डिप्लोमा हासिल की। 1980 ई० में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन्हें तीसरा, पाँचवाँ और सातवां एवं आठवाँ त्रिनालय प्रदर्शनी में प्रतिभागी के रूप में आमंत्रित किया गया। इन्होंने चित्रकार के रूप में कला यात्रा की शुरूआत की और बाद के दिनों में स्थापित मूर्त्तिकार के रूप में भी ख्याति अर्जित की। 1982 में लंदन में आयोजित भारतीय कला प्रदर्शनी (भारत महोत्सव) में भी इनकी सशक्त सहभागिता रही है। इस कला कार्यशाला में इन्होंने जो चित्रकृति सृजित की है उसका शीर्षक है-'जस्टिस फॉर आल, लेट कॉमन मेन भिक्टिम, आलसो फ्लाई'। इस चित्र में इन्होंने बहुत सारे पंछियों को उन्मुक्त भाव से उड़ते दिखाया है।

गोगी सरोज पाल– देश की प्रतिष्ठित महिला चित्रकार श्री मती गोगी सरोज पाल का जन्म निओली, उत्तर प्रदेश में 1945 ई० में हुआ। इन्होंने कला महाविद्यालय लखनऊ से चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया। इन्हें राष्ट्रीय ललित कला आकदमी नई दिल्ली ने राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा है। श्रीमती गोगी के रचनात्मकता के कई आयाम हैं। ग्राफिक, प्रिंट मेकिंग सेरामिक्स, स्टूडियो पाटरी सहित कलम की धनी इस चित्रकार के पन्द्रह कहानियों का संग्रह 'फुलबारी' राजकमल प्रकाशन से प्रकाशिता हो चुकी है। लगभग 45 एकल और 150 समूह चित्र प्रदर्शनियाँ इनके नाम हैं। यूगोस्लाविया, जर्मनी, फ्रांस, क्यूबा और जापान में प्रदर्शित की जा चुकी हैं।

वृन्दावन सोलंकी– देश के ख्यातिनाम चित्रकार वृन्दावन सोलंकी का जन्म गुजरात के जूनागढ़ में 1942 ई० में हुआ। इन्होंने पोस्ट डिप्लोमा और डिप्लोमा चित्रकला और छापा कला विषयों में एम० एस० विश्वविद्यालय बड़ौदा से किया। 1966-67 में गुजरात ललित कला अकादमी द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार मिला। 1969 ई० से अबतक 43 एकल प्रदर्शनी और 128 समूह प्रदर्शनी में इनके चित्र भारत सहित यू०एस०ए०, यू० के०, सिंगापुर के अलावा कई प्रदर्शनी में शामिल किये जा चुके हैं। इस कार्यशाला में इन्होंने पटना उच्च न्यायालय के भवन को रेखांकन के रूप में सृजित किया है जो सामान्य जन के साथ कला प्रेमियों के दिलों में खास जगह बना लेगा।

बालन नाम्बियार– बालन नाम्बियार का जन्म 1937 ई० में कन्नापुरम (कन्नुर जिला) केरल राज्य में हुआ। इन्होंने राजकीय कला एवं शिल्प महाविद्यालय मद्रास से मूर्ति कला में प्रथम श्रेणी से डिप्लोमा प्राप्त किया। 1982-83 में भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा सीनियर फेलोशिप इन्हें प्राप्त हुआ। 1983-85 में जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल फण्ड, नई दिल्ली द्वारा नेहरू फेलोशिप प्रदान किया गया। 2006 ई० में केरल ललित कला अकादमी द्वारा इन्हें एकेडमी फेलोशिप प्राप्त हुआ। इनकी पहली प्रदर्शनी 1966 में त्रिवेन्द्रम के अमेरिकन सेंटर में आयेजित की गई। 1975 ई० में 2 से 6 फीट के स्टील माध्यम में सृजित 24 मूर्ति शिल्प की एकल, प्रदर्शनी बैगलोर में आयोजित हुई। 1978 में जर्मनी में दो एकल, प्रदर्शनी, 1981 में इटली में और दिल्ली में इनके मूर्ति शिल्पों की एकल प्रदर्शनी, 1982 में वेनिस विनालय इटली में इनके मूर्तिशिल्प प्रदर्शित किये गये। अबतक इनके स्टील माध्यम से सृजित मूर्ति शिल्प की 32 प्रदर्शनी आयोजित की जा चुकी है। इस कार्यशाला में स्टील माध्यम में इन्होंने जो मूर्ति शिल्प सृजित किये हैं उसका शीर्षक हैं 'मिरर आईडियल'। ये राष्ट्रीय ललित कला, अकादमी नई दिल्ली के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर चुके हैं।

बसुधा थोजर- वसुधा थोजर का जन्म 1956 ई० में मैसूर में हुआ। कला की शिक्षा- दीक्षा इन्होंने काव्य एवं शिल्प महाविद्यालय मद्रास और स्कूल और आर्ट एण्ड डिजाईन क्रोयडॉन यू० के० से प्राप्त की।

1981 से 1997 ई० तक ये मद्रास के चोला मंडल आर्टिस्ट विलेज क्षेत्रीय ललित कला अकादमी के स्टूडियो में और बाद के दिनों में गढ़ी स्टूडियों में सृजनरत रही।

ये फाईन आर्ट फेकेल्टी बड़ौदा, एन० आई० डी० अहमदाबाद और आई० आई० सी०डी० जयपुर के साथ देश भर के कई व्याख्यान माला कार्यक्रम से संबद्ध रहीं। इण्डिया फाउण्डेसन द्वारा वर्ष 2004-6 और 2009-11 आर्ट्स बैंगलोर और दहिम्मत वर्कशॉप' के ग्रान्ट इन्हें प्राप्त हुए। इनके द्वारा किये गये चित्र प्रदर्शनी, कला कार्यशाला और रेसीडेन्सी की फेहरहिस्त काफी लंबी है। उनमें से कुछ महत्वपूर्ण 1996 में रेसिडेन्सी। प्रदर्शनी- सिटी इन्टर नेशनल डेस आर्ट्स पेरिस, रेसिडेन्सी- सैडन माइल्स आर्ट सेंटर कारलीसेल, रेसिडेवसी- शो- गैसवर्ग स्टूडियो लन्दन आदि हैं।

दीवान मन्ना – दीवान मन्ना का जन्म पंजाब प्रांत के मनसा जिले के वरेटा गाँव में हुआ। इन्होंने राजकीय कला विद्यालय चंडीगढ़ से छापा कला विधा में 1982 ई० में कला प्रशिक्षण पूरा किया।

1982 ई० से इनकी अबतक 25 से ज्यादा राष्ट्रीय स्तर की समूह प्रदर्शनी, 20 से ज्यादा एकल प्रदर्शनी आयोजित हो चुकी हैं। 1984 ई० में शिमला में हिमाचल प्रदेश के भाषा एवं कला संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रदर्शनी, 1991 ई० में नार्थ जोन कल्चर सेंटर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय फोटोग्राफी एवार्ड, 1995 में आई फैक्स दिल्ली द्वारा अखिल भरतीय फोटोग्राफी एवार्ड, पुन: 1996 ई० में आई फैक्स द्वारा आयोजित अखिल भारतीय फोटग्राफी एवार्ड, 1996 ई० में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा फोटो ग्राफी में नेशनल एकेडमी एवार्ड, 1996 में स्टेट ललित कला अकादमी पंजाब और 1998 में फोटो आर्टिस्ट ऑफ द ईयर सम्मान-19वीं विनालय कानवेन्सन ऑफ फेडरेसन ऑफ इन्डियन फोटोग्राफी से सम्मानित। लगभग 11 रेसिडेन्सी तीन ऑडियो-विडियो लक्चर, चंडीगढ़ ललित कला अकादनी के ये वर्त्तमान अध्यक्ष है।

प्रशांत पंजियार-फोटोग्राफर– 30 मार्च 1957 में जन्म। स्वयं प्रशिक्षित छाया- कार हैं जिन्होंने पूर्ण वि० वि० से राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर किया। इन्होंने वर्तमान व्यवस्था सामाजिक सरोकार से संबंधित छायाँकन की शुरूआत छात्र जीवन से ही शुरू की। इन्होंने 'वैडिट्री इन द चम्बल' पुस्तक से छायाकार के रूप में अपना केरियर शुरू किया। 1994 ई. में ये 'पेट्रियाट' समाचार पत्र से जुड़े इनकी और राईट्स आफ्टर द एशसियेशन ऑफ इन्दिरा गाँधी, टेरोरिज्म इन पंजाब आदि छायाचित्रशृंखला प्रसिद्ध रही।

रघुराय– रघुराय ने दिसंबर 1942 में जन्मे 23 वर्ष की उम्र से ही फोटोग्राफी शुरू की। 1965 ई० में इन्होंने 'द स्टेट्समेन' समाचार-पत्र में चीफ फोटो- ग्राफर के रूप में जुड़े। 1977 से 1980 तक ये छाया संपादक के रूप में सनडे साप्ताहिक में रहे। कला इन्होंने भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर छायांकन शृंखला तैयार किये।

1972 ई० में इन्हें 'पद्मश्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष 1992 ई० में ह्युमेन मेनेजमेंट ऑफ वाइल्डलाईफ इन इण्डिया के लिये यूनाइटेड स्टेट्स की ओर से 'फोटोग्राफर ऑफ द ईयर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रघुराय के जीवन वृत और इनके छायांकन पर नेशनल जियोग्राफिक, सी०एन०एन० और वी०वी०सी० ने डाक्यूमेंट्री फिल्म बनाया। मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटरनल एफेयर्स ने इनके ऊपर डॉक्यूमेट्री फिल्म तैयार की। इनके छायाचित्र विवलियोथिक नेशनल, पेरिस और नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट के द्वारा संग्रहित की जा चुकी है। रघुराय के छायांकन से संबंधित कई महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हैं।

श्याम शर्मा– पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रो० श्याम शर्मा का जन्म 1941 ई० में उ० प्र० में हुआ। कला की शिक्षा दीक्षा इन्होंने लखनऊ कला एवं शिल्प विद्यालय से प्राप्त की। पटना कला एवं शिल्प महाविद्यालय के ग्राफिक विभाग में कलाकारों की कई पीढ़ियों को इनका कुशल मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वर्ष 1998 ई. में इन्हें राष्ट्रीय ललित कला अकादमी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 1991 ई. में इनके छाया-चित्रों को कई अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। इसी वर्ष इनकी छायाकृतियों को नीदरलैंड की प्रदर्शनी में शामिल एवं पुरस्कृत किया गया। इन्हें भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा सीनियर फेलोशिप भी प्रदान किया जा चुका है।

फनलैण्ड, सर्बिया मान्टनिग्रो (बेलग्रेड), नेपाल, पोर्टब्लेयर और दो बार अमेरिका की कला यात्रा इन्होंने की है। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कला शिविरों और प्रदर्शनियों में ये आमंत्रित हो चुके हैं। वर्ष 2012 में इन्हें अबुल कलाम शिक्षा सम्मान से नवाजा जा चुका है।

इस कला शिविर के लिये प्रो० श्याम शर्मा ने 'सबके लिए न्याय' शीर्षक की चित्रकृति सृजित की है।

मिलन दास– मिलनदास का जन्म 1955 ई० में खगौल पटना में हुआ। इन्होंने पटना कला एवं शिल्प विद्यालय से चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया। वर्ष 1989 ई. में इन्हें राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1994-96 में इन्हें जूनियर फेलोशिप और वर्ष 2000-02 में सीनियर फेलोशिप मानव संसाधन विभाग और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा प्राप्त हुआ। 1987 ई० बिहार ललित कला अकादमी, पटना द्वारा स्टेट एकेडमी एवार्ड, 1987 में शिल्प कला परिषद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रदर्शनी में पुरस्कार, पुन: 1987 और 1985 में पुरस्कृत किया गया।

वर्तमान में बिहार सरकार ने इन्हें राधामोहन वरिष्ठ सम्मान 2014 में प्रदान किया। अभी ये बिहार ललित कला अकादमी पटना के उपाध्यक्ष हैं। डेढ़ दर्जन के लगभग राष्ट्रीय कलाशिविरों में इनकी भागीदारी रही है। जर्मनी, बंगलादेश, काठमांडू मुम्बई कोलकाता, भोपाल, आदि के कई समूह प्रदर्शनी में इनकी भागीदारी रही है।

इस कला शिविर के लिए मिलन दास ने 'पावर ऑफ ओमेन' नाम से चित्र सृजित किया है।

रजत घोष– का जन्म पटना में 1956 ई० में हुआ। इन्होंने पटना कला एवं शिल्प विद्यालय से मूर्तिकला में डिप्लोमा प्राप्त किया है। 1985 ई० में राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। सप्तम अन्तर्राष्ट्रीय त्रिनालय, भारत, तेजपुर आसाम के अखिल भारतीय प्रदर्शनी, भारत भवन भोपाल में आयोजित विनालय, अन्तर्राष्ट्रीय एशियन यूरोपियन आर्ट विनालय, अंकारा टर्की 1990, एशियन आर्ट विनालय, बंगलादेश में इनके मूर्ति शिल्प प्रशंसित एवं प्रदर्शित किये जा चुके हैं। इन्हें मानव संसाधन विभाग एवं संस्कृति विभाग भारत सरकार द्वारा कनिष्ठ एवं वरिष्ठ फेलोशिप प्रदान किया जा चुका है। ललित कला अकादमी का रिसर्च ग्रान्ट भी इन्हें प्राप्त हो चुका है। इनके मूर्ति शिल्प नेशनल गैलरी ऑफ माडर्न आर्ट, दिल्ली, भारत भवन, भोपाल, ललित कला अकादमी, दिल्ली के साथ-साथ हिरोशिमा आर्ट गैलरी जापान, के अलावा यू० एस० ए० स्वीडेन और जर्मनी के निजी कला संग्राहकों के निजी संग्रह में संग्रहित हैं।

इस कला शिविर के लिए रजत घोष ने 'इन्टीगेशन' नामक मूर्ति शिल्प सृजित किया है।

पटना उच्च न्यायालय के शताब्दी समारोह के अवसर पर कार्यशाला में रचित सभी कृतियों को उच्च न्यायालय को समर्पित किया जाएगा।

–मनोज कुमार बच्चन

संगीत बिहान में राग चारुकेशी

कला संस्कृति एवं युवा विभाग और बिहार संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित संगीत बिहान ने पटना के कलाकारों और संगीत प्रेमी के बीच अपनी खास पहचान बना ली है। अहले सुबह आयोजित होने वाले इस आयोजन विभाग ने शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि ही पैदा नहीं की, सम्मान

भी दिलाने की कोशिश की है। हरेक माह के दूसरे और चौथे शनिवार की सुबह राजधानी वाटिका के सुरम्य वातावरण में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में सितम्बर माह की प्रथम प्रस्तुति आत्माराम मिश्र ने दी। उन्होंने राग चारुकेशी में बड़ा ख्याल पेश किया, जिसके बोल थे, 'पिया मोरे आए'...। इसी राग में उन्होंने छोटा ख्याल भी सुनाया, जिसके बोल थे, 'रे मन हरि गुण गाओ...'। कार्यक्रम में राग भैरवी में ठुमरी प्रस्तुत कर उन्होंने सवेरे के वातावरण को रसमय बना दिया। हारमोनियम पर उनके साथ संगत कर रहे थे विवेक कुमार शिरोमणि, तबले पर मुरली मनोहर मिश्र, तानपुरा पर अनुराग कुमार मिश्र और राज नारायण मिश्र। माह की दूसरी प्रस्तुति के लिए कोलकाता की शास्त्रीय गायिका कोयल दासगुप्ता को खास तौर पर आमंत्रित किया गया था। उनके संगीत की मधुर तान ने श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

माह के चौथे शनिवार को संगीत बिहान के अंतर्गत कोलकाता से आयी शास्त्रीय संगीत की प्रतिनिधि गायिका अंजना नाथ की प्रस्तुति हुई। दो राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित गायिका अंजना नाथ अपने सुरों से राजधानी वाटिका में सुबह सैर करने वालों को बरबस आयोजन स्थल तक खींच लाने में सफल रहीं। अपनी गायिकी के विविध रंगों से उन्होंने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के आरंभ में कला संस्कृति विभाग के संयुक्त सचिव एवं बिहार संगीत नाटक अकादमी के सचिव सुबोध कुमार चौधरी ने अंजना नाथ और सहयोगियों को सम्मानित किया।

तू तो मोरे राम आए नहीं

भारतीय नृत्य कला मंदिर का बहुद्देशीय सांस्कृतिक परिसर शास्त्रीय संगीत की मधुरता से सराबोर हो गया जब वरिष्ठ शास्त्रीय गायक पं. संगीत कुमार नाहर ने राग मालकौंस में 'तू तो मोरे राम आए नहीं' का आलाप लिया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और कला संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा होरोइजन शृंखला के अंतर्गत आयोजित इस कार्यक्रम की विशेषता थी कि उनकी संगत के लिए भी देश के तमाम नामचीन कलाकार उपस्थित थे। उनके संगत में तबले पर डा. राज कुमार नाहर, हारमोनियम पर प्रेमचंद लाल और तानपुरा पर संदीप कुमार उपस्थित थे। पं. नाहर ने विलंबित मध्य लय में 'कवन मंत्र जंत्र पढ़ी डारियो मोहन सो' सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने श्रोताओं की मांग पर राग मिश्र में एक टप्पा दीदार भी गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में संगीत प्रेमियों के साथ विभिन्न विधाओं के वरिष्ठ कलाकार उपस्थित थे।

दिल्ली में दिखी बिहार की प्रतिभा

कृष्ण के नील रंग ने दिल्ली के कलाप्रेमियों को काफी आकर्षित किया। वहीं पतंगों की उड़ान को भी कई लोगों ने सराहा। मौका था दिल्ली में लगी आइसीसीआर द्वारा आयोजित वीरेन्द्र कुमार सिंह की पेंटिंग प्रदर्शनी का। काउंसिल द्वारा परफॉर्मिंग आर्ट को बढ़ावा देने के लिए काफी प्रोग्राम और लाइव शो कराये जाते हैं। ब्रांच ऑफिस खुलने के दो साल बाद पहली बार आइसीसीआर द्वारा किसी बिहार के वरिष्ठ कलाकार वीरेन्द्र कुमार सिंह से

इसकी शुरूआत की। अब तक चाक्षुष कला काउंसिल की नजर में अपेक्षित रहा। बीरेन्द्र कुमार सिंह इजेडसीसी के सदस्य भी रह चुके हैं। काउंसिल ने बीरेन्द्र कुमार की पेंटिंग प्रदर्शनी लगाने का फैसला लिया। बीरेंद्र कुमार के लिए यह एक उपलब्धि है कि काउंसिल द्वारा उनकी एकल पेंटिंग प्रदर्शनी आयोजित की गयी।

ललित कला अकादमी के सदस्य और वरिष्ठ कलाकार बीरेन्द्र कुमार सिंह की एकल प्रदर्शनी नयी दिल्ली के इंद्रप्रस्थ स्टेट, आजाद भवन की आर्ट गैलरी में 29 अगस्त से 3 सितंबर तक आयोजित हुई थी। इस एग्जिबिशन के लिए राधा-कृष्ण और पतंग थीम की नयी कलेक्शन उन्होंने तैयार की थी।

प्रदर्शनी का उद्घाटन आइसीसीआर की निदेशक मीनाक्षी मिश्र ने किया। उन्होंने कहा कि बीरेंद्र कुमार की पेंटिग्स में पतंग और राधा-कृष्ण सीरीज के चित्र लोगों को काफी आकर्षित कर रहे हैं। इस मौके पर वहां महेंद्र सहगल, नरेश कुमारी उपस्थित थे। हॉल में उनकी 25-30 पेंटिंग लगी थी। उन्होंने अपने पुराने कामों में से कुछ चुनिंदा काम आर्ट गैलरी में प्रदर्शित किये गये। पतंग सीरीज और राधा-कृष्ण की पेंटिंग में से भी कई पेंटिग्स को प्रदर्शित किया गया। उन्होंने प्रदर्शनी के लगभग एक महीने पहले से ही राधा-कृष्ण सीरीज में की और पेंटिंग तैयार की। उन्होंने अपनी सभी पेंटिंग्स में अपने विषय के साथ कई और चीजों को भी प्रदर्शित किया। सभी पेंटिंग में उन्होंने एक्रीलिक पेंट का इस्तेमाल कर रहे हैं। कैनवास का आकार भी काफी बड़ा था। बीरेन्द्र कुमार का कहना है कि आइसीसीआर ने इस तरफ ध्यान दिया है। मैं खुश हूं कि इसकी शुरुआत मुझसे हुई है, इससे आगे भी कलाकारों को मौका मिलेगा।

-अंजलि गुप्ता

शुक्र गुलजार में शास्त्रीय गायन

भारतीय नृत्य कला मंदिर और कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के तत्वावधान में शुक्र गुलजार कार्यक्रम के तहत भारतीय नृत्य कला मंदिर में परेश नायक के शास्त्रीय गायन ने पटना में दशहरे के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों की याद दिला दी। शास्त्रीय संगीत की परंपरा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस अवसर पर कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव चंचल कुमार भी उपस्थित रहे। मुंबई से आए ख्यातिनाम शास्त्रीय गायक परेश नायक ने अपने गायन से दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के कलाकार परेश नायक ने लीलाताई ने खांडेकर विश्वविद्यालय से संगीत विशारद किया है। ये उच्च कोटि के संगीत संयोजक भी माने जाते हैं। इन्होंने कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगीत आयोजनों को अपनी प्रस्तुति से समृद्ध किया है। मंच पर इनके साथ तानपुरा पर मालिनी नायक, तबला पर विष्णु चौधरी और हारमोनियम पर सुधीर कुमार संगत कर रहे थे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्य निदेशालय के निदेशक और भारतीय नृत्य कला मंदिर के अधिशासी के. डी. प्रौज्ज्वल ने परेश नायक को पुष्प-गुच्छ से सम्मानित किया ।

'आई विल नॉट क्राइ' ने किया 'सेव द चिल्ड्रेन' का आह्वान

हाल के वर्षों में शायद यह पहला मौका था जब किसी एकल अभिनय को देखने के लिए बड़ी संख्या में दर्शक पहुंचे। तीन सितंबर को रवीन्द्र भवन में दिल्ली से आयी लुशिन दुबे ने अपने एकल अभिनय से सबका दिल जीत लिया। 'आई विल नॉट क्राइ' नाटक के जरिए उन्होंने दर्शकों को रोमांचित करके रख दिया।

कला संस्कृति मंत्री विनय बिहारी, कवि आलोक धन्वा, प्रो. विनय कंठ, प्रो. श्याम शर्मा, नवनीत शर्मा, प्रो. भारती एस. कुमार, प्रो. संतोष कुमार, डॉ. अजीत प्रधान, आर. एन. दास, सी.पी.एन. सिन्हा, डॉ माला सिन्हा, सुमन कुमार सहित पटना की कई बड़ी हस्तियां व चर्चित लोग इस नाटक को देखने पहुंचे थे। 'सेव द चिल्ड्रेन' की ओर से आयोजित इस अंग्रेजी नाटक का आकर्षण कुछ ऐसा था कि दर्शक टस से मस नहीं हुए।

पूरे 55 मिनट तक एक्टिंग व मल्टीमीडिया का जादू चलता रहा। अरविंद गौड़ निर्देशित नाटक में लुशिन दुबे मंच पर अकेली थीं। एक लंबा-सा टेबुल था। टेबुल के पीछे कुर्सी थी और वह कुर्सी पर बैठी थीं। उनके पीछे बड़ा-सा स्क्रीन था। जब वो बोलती थी तो स्क्रीन पर उनकी हू-बंहू तस्वीरें उभरती थीं। तस्वीरें ऐसी उभरती थीं कि लोग देखते रह जा रहे थे और एक्टिंग ऐसे करती थी कि नजरें नहीं हटती थीं। वे पल-पल रोल बदलती थीं। कभी एंकर, कभी सामाजिक कार्यकर्त्ता, कभी दुखियारी माँ,

कभी भाई तो कभी डॉक्टर बन के दर्शकों को प्रभावित करती रही। एक साथ नौ किरदारों को लुशिन ने मंच पर जीवंत किया। नाटक इतना प्रभावी हुआ कि हर कोई अर्चेभित था। दरअसल, नाटक का सबसे सशक्त पक्ष था लूशिन का अभिनय और दूसरा पक्ष था मल्टीमीडिया का शानदान प्रयोग। इसके माध्यम से खासकर न्यूज टी.वी. चैनलों पर होनेवाली उन बहसों को दिखाया गया था जहां गभीर मद्दों को भी हास्य रूप दे दिये जाता है। मुद्दा अलग रह जाता है और बहस अलग मनोरंजक दिशा में मुड़ जाती है।

अपने किरदारों के जरिए लुशिन, बच्चों को बचाने की वकालत करती रही। समय से पहले किस तरह काल के गाल में छोटे-छोटे बच्चे समा रहे हैं, इसे लुशिन ने अपने अभिनय से बखूबी सबके सामने रखा। कई दृश्य तो इतने प्रभावी दिखे कि दर्शकों की आंखें भी नम हो गईं। हिंदी-अंग्रेजी इस नाटक ने पटना के दर्शकों पर कुछ अलग ही प्रभाव डाला। अरविंद गौड़ के निर्देशन ने इस नाटक को बहुआयामी बना दिया था। यह न सिर्फ समाज के स्वास्थ्य संबधी गंभीर मुद्दों को जाहिर कर रहा था बल्कि भारतीय समाज में मौजूद उन विषमताओं को भी सामने लाने की कोशिश करती थी, जिसके कारण लोग गाँवों से निकलकर शहरों में आते हैं। विस्थापित होते हैं और उस आकाश के नीचे जिदंगी गुजारते हैं, जहां कई तरह की समस्याओं से उनका सामना होता है। नाटक देखने के बाद भी उठाए गए सवाल बेचैन करते हैं।

–दीपक दक्ष